

Written by कुमार सौवीर  
Sunday, 16 June 2013 10:31

यूरोलॉजी में फ़र्शिते केतौर पर पूजे जाते हैं डा अदीबुल रजिवी

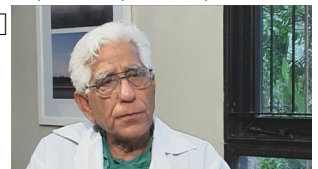
: 00000000 0000000000 00 0000 000000 000000 00 00000000 00000000 00 000000 : 00000000 00 00000000  
00 000000000000 0000 000000 000000 00 000000 000000 000000 : 000000000 0000 0000 00000000 00 000000 00  
00000000 :

000000 000000



00000000 : वह 0 कडाक्टर है0 मानवता के सेवा केला0 पूरी तरह समर्पति डाक्टर0 इसीला0 सरिफ मरीज ही नहीं, यूरोलॉजी के डाक्टरों के दुनिया में इस शख्स के नरिक्वािद रूप से फ़र्शिते केतौर पर स्वीकर कया जाता है0 उनकी मौजूदगी देश-वदेश से आये यूरोलाजी के वखियात डाक्टरों केला0 कतिनी महत्वपूर्ण हो सकती है, इसक अंदाजा तब देखने के मलिा जब बी0 चयू में चार दनों तक चली अंतर्राष्ट्रीय यूरोकॉन में शामिल होने से वे दो दनि पछिड़ गये0 मगर इस यूरोकॉन के असली शुरुआत तब ही हो पायी जब डॉक्टर सैयद अदीबुल हसन रजिवी क पदार्पण हो सका0 दरअसल उनके वीजा पर उनक नाम ही गलत चढ़ गया था0

लेकिन बचपन से लेकर फ़र्शिता बनने तक के उनकी यह यात्रा बेहद कष्टकर करही है0 पीडब्ल्यूडी में इंजीनयिर थे उनके पति मोहम्मद हुसैन0 जौनपुर में खेतासराय के नक्कि क्लापुर में पुशतैनी मकन राहत मंजलि आज भी है0 सन 1939 के 11 तारीख के इसी घर में पैदा हु0 थे सैयद अदीबुल हसन रजिवी0 शुरुआती शक्कि बनारस के ही जयनारायण हायर सेकेंद्री स्कूल से हुई0 फरि क्वींस कलेज में 11 कक्षा में प्रवेश लिया0 मगर हाय धरम-जाती क झगड़ा जो 0 कदूसरे के मार डालने पर आमादा था और बाकयदा देश क बंटवारा चाहता था0 कैन, क्या, कहां, कैसे रहे, यह झगड़ा-टंटा हर घर में था0 इसी बीच उनके माता-पति तो खुद अपना देश नहीं छोड़ पाये, पर उन्हें अधूरी पढाई के बीच ही पाकिस्तान भेज दिया0 बलिकुल अक्ले0 शायद तब के सामाजकि हालातों से वे बेहद सशंकति थे0 चाहते थे क हनिदुस्तान तो उनक मातृभूमि है, लेकिन चूंक खानदान क ज्यादा हसिसा पाकिस्तान की ओर नक्कि गया था, इसला0 उन्होंने अपने जगिर के टुकड़े अदीबुल हसन रजिवी के पाकिस्तान की ओर रवाना करा दिया0



खैर, इस दरदनाक हादसे के बाद उनकी पढाई कराची में हुई0 मेडिकल डाक्टरी की ओर आगे की पढाई केला0 इंग्लैंड चले गये0 लेकिन कर्मक्षेत्र पाकिस्तान ही बनाया0 आज उनके अधीनस्थ और पटना में पैदा होकर बंटवारे के दंश के चलते पाकिस्तान गये डा 0 स0 अनवार नक्की बताते हैं क सन 71 में पाकिस्तान के हबीब क्षेत्र में सुजावल चूहड़ जमाली इलाके में बाढ के वभीषकि के चलते महामारी पैल गयी थी0 बदहाली क मंजर रूला देने वाला था0 वहां पर तैनाती नक्की के मली तो देखा क डा रजिवी पूरी चक्किा कमान सम्भाले हु0 है0 दनि रात मेहनत0 खानापीना तक भूल कर0 सरिफ

0000 00 000000 00 000000 00, 0000 00000 00 0000000 00000000 00000 000000

Written by कुमार सौवीर  
Sunday, 16 June 2013 10:31

---

इंसानयित की सेवा रोगी की देखभाल सर्वप्रथम बस उसी समय से मैंने ही नहीं, वहां मौजूद अनेक डाक्टरों ने तय कर लिया कि चाहे कुछ भी हो जा, मगर सारा जीवन अब डा रजिवी के साथ ही गुजारा जा गा

बहरहाल, इसी दौरान कराची में दस बिस्तरों से शुरू किये गये क अस्पताल के इस शाख्स ने आज क हजार बिस्तरों तक वस्तितार दे दिया और कतिना भी बड़ा ऑपरेशन क्यों न हो, किसी भी मरीज से इस अस्पताल में क भी पैसा नहीं लिया जाता है नाम है संधि इंस्टीच्यूट आफ यूरोलाजी ऐंड ट्रांसप्लांटेशन और नशुल्क सेवा क पूरे सार्क देशों में यह इक्त्तौता संस्थान है डा रजिवी यहां आजीवन नदिशक और प्रोफेसर है

000000 0000 0000000 000 000000 00 000000000 00000000 00 00000 0000 00 000000 00 0000 000000  
000000 0000 :- [000000 00 000000 00 00000000 000000000 00, 000000 00 00000 0000](#)

0000 00 00000000 00 00000000000 00000 000000 00 000000 -000000 000000 00 000000 000000 0 [0000](#) :-  
[00000000 00 000000](#)